REVIEW OF RESEARCH
IMPACT FACTOR : 5.2331(UIF) UGC APPROVED JOURNAL NO. 48514 ISSN: 2249-894X
VOLUME - 7 | ISSUE - 8 | MAY - 2018

मुगलकालीन शासन की ब्रजक्षेत्र में हिन्दू प्रतिक्रिया और जाट शक्ति का उत्कर्ष – एक सामयिक अध्ययन

डॉ. नीरज कुमार गौड़
प्राचार्य , एच के एल कालेज ऑफ ऐजूकेशन,
सम्बध्द पंजाब विश्वविद्यालय, चंड़ीगढ़, गुरूहरसहाय, फिरोजपुर. (पंजाब)

प्रस्तावना :

भारत में मुसलमानी शासन के अन्तर्गत मुगल काल अत्यन्त महत्वपूर्ण माना जाता है। जहॉ तक ब्रजप्रदेश का प्रश्न है, इसके सांस्कृतिक स्वरूप को मुगलकाल में ही संवारा सजाया गया है। पूववर्ती सुलतानों के मजहबी तास्सुब के कारण उसकी पूर्ति इस काल में हो गई जिसका सबसे बड़ा श्रम मुगल सम्राट अकबर को जाता है। इसलिए अकबर की शासन नीतियों के कारण उसके शासन काल को ब्रज प्रदेश के इतिहास का स्वर्ग युग कहा जा सकता है।

सम्राट अकबर की धार्मिक नीति उसकी शासन पद्धति का ही एक अंग थी। जिसके कारण उसे अपने राज्यकाल में इतनी सफलता प्राप्त हुई थी। उसने सभी धर्मवालों के साथ सहिष्णुता तथा न्याय की नीति का अनुसरण किया। ऐसा कहा जाता है कि बाबर ने अपने पुत्र हुमायूँ को एक वसीयतनामा लिखा था, जिसकी प्रति भोपाल के राजकीय पुस्तकालय में सुरक्षित बतायी जाती है। उसमें हुमायूँ को उपदेश देते हुए कहा गया है– हिन्दुस्तान में अनेक धर्मों के लोग रहते है। भगवान को धन्यवाद दो कि उन्होने तुम्हें इस देश का राजा बनाया है। तुम तास्सुब से काम न लेना, निष्पक्ष होकर न्याय करना और सभी धर्मों के लोगों की भावनाओं का ख्याल रखना। गाय को हिन्दू पवित्र मानते हैं अतः जहॉ तक हो सके गो वध नहीं करना और किसी भी सम्प्रदाय के पूजा स्थानों को नष्ट नहीं करना।[1]

बाबर की उक्त वसीयत के अनुसार हुमायूँ को आचरण करने का अवसर नहीं मिला किन्तु अकबर ने उसका पूरी तरह पालन कर अभूतपूर्व सफलता प्राप्त की थी।

आरम्भ में अकबर का इस्लाम के प्रति दृष्टिकोंण श्रद्वा का था। यद्यपि उसमें मजहबी कट्टरता नहीं थी। बाद में विभिन्न धर्मों और समप्रदायों के विद्वानों एवं संत महात्माओं से धार्मिक विचार विमर्श करते रहने से वह बडे उदार विचारों का हो गया था। अकबर ने 1563 ई0 में मथुरा की यात्रा की, तभी उसे ज्ञात हुआ कि मथुरा में तीर्थ–यात्रियों से कर लिया जाता है। यह तीर्थ यात्रा कर हिन्दू धार्मिक स्थलों से व्यक्ति के पद तथा आर्थिक स्थिति के अनुसार लिया जाता था। अबुल फजल के अनुसार इस कर से साम्राज्य को करोडो रूपये की आमदनी होती थी। उसने उसी समय अपने सारे राज्य में यात्रा कर बन्द करने का आदेश प्रचारित करवा दिया।[2]

मुसलमानी शासन के आरम्भिक काल से ही गैर मुस्लिम जनता पर जजिया लगाया था। उसने सर्वस्वीकृत इस्लामी रिवाज तथा अपने मुसलमानी मंत्रियों और सलाहकारों के कड़े विरोध की उपेक्षा कर हिन्दुओं पर से सर्वाधिक भेदभाव पूर्ण घृणित जजिया कर को मार्च 1564 ई0 में सदैव के लिये बन्द कर दिया।[3] इसके बाद अकबर ने सभी धर्म वालों को अपने–अपने मंदिर देवालय इत्यादि बनवाने की स्वतंत्रता प्रदान की। अकबर के इस महान कार्य से हिन्दू ह्रदय से उसके शुभ चिंतक बन गये। इसका प्रभाव ब्रज प्रदेश पर यह दिखाई दिया कि यहॉ कुछ वर्षों में ही तीर्थ स्थलों की विशेष उन्नति हुयी।

समस्त हिन्दू समुदाय में गाय को पवित्र माना गया है। सभी हिन्दू उसे गौ माता कहकर उसके प्रति श्रद्धा व्यक्त करते हैं सम्राट अकबर ने गौ–वध को बंद करने की आज्ञा प्रचारित कर अपनी हिन्दू जनता का मन जीत लिया। शाही आज्ञा से गौ हत्या के अपराध की सजा मृत्यु नियत थी। इस प्रकार उस समय गौ–हत्या बिल्कुल बंद हो गयी।

हिन्दुओं की सुविधा के लिये सम्राट अकबर ने जो व्यवस्था की थी वह जहॉगीर के काल में बनी रही और ब्रज प्रदेश में मन्दिरों के निर्माण का जो सिलसिला अकबर के काल में चला वह जहॉगीर नीति का अनुसरण किया। अततः उसके काल में शांति और व्यवस्था कायम रही थी।

जहॉगीर के शासनकाल में ब्रज में शांति भंग होने का एक बड़ा अवसर तब आया, जब शाही आज्ञा से वैष्णवों की कंठी माला पहनने और तिलक लगाने पर रोक लगा दी गयी। मुसलमान हाकिमों ने शाही आदेश के पालनार्थ ब्रज के माला तिलक धारी वैष्णवों पर अत्याचार करना आरम्भ कर दिया इसके कारण बहुत से लोगों ने विवश होकर कंठी माला उतारकर रख दी और तिलक लगाना बंद कर दिया। जिन्होंने ऐसा करना पसन्द नहीं किया वे मुसलमान हाकिमों की दृष्टि से बचने के लिये ब्रज छोड़कर अन्य स्थानों को चले गये। सम्प्रदाय में यह धार्मिक अनुश्रुति बड़ी ही प्रसिद्ध है कि गोस्वामी गोकुलनाथ जी के प्रयास से जहॉगीर ने यह आज्ञा वापिस ले ली थी।[4]

शाहजहॉ के शासन काल में ब्रजप्रदेश की स्थिति सन्तोषप्रद नहीं रही। सन 1648 ई0 में शाहजहॉ ने अपनी राजधानी आगरा से हटाकर दिल्ली में कायम की। जहॉगीर के आगरा में कम रहने के कारण यहॉ की प्रगति में पहले से ही शिथिलता आ गई थी। अब राजधानी के स्थानान्तरण से आगरा सूबे की प्रगति रूक गयी। जिसका प्रतिकूल प्रभाव ब्रज प्रदेश की राजनैतिक, आर्थिक और सामाजिक स्थिति पर भी पड़ा।

मुगल सम्राट अकबर ने जिस उदार धार्मिक नीति के कारण अपने शासन में अभूतपूर्व सफलता प्राप्त की थी। उसकी इस धर्मिक नीति का अनुकरण किसी भी पूरवर्ती मुगल सम्राट ने नहीं किया। शाहजहॉ भी मुसलमानों में सुन्नियों का पक्षपाती और शिआओं के लिये अनुदार था। ऐसी स्थिति में उससे हिन्दू धर्म के प्रति सहिष्णु और उदार होने की आशा नहीं की जा सकती। इससे हिन्दुओं में बड़ी खलबली मच गयी थी। फिर भी बड़े हिन्दू दरबारियों के प्रभाव के कारण आज्ञा के पालन पर जोर नहीं दिया गया। इस प्रकार शाहजहॉ ने चाहे खुले आम हिन्दू धर्म के प्रति विरोध भाव प्रकट नहीं किया था। तथापि उसकी धार्मिक नीति ने उसके उत्तराधिकारी औरंगजेब के मजहबी उन्माद के लिये पृष्ठभूमि अवश्य प्रस्तुत कर दी थी।

सन 1654 ई0 के बाद मुगल सम्राज्य शाहजहॉ के ज्येष्ठ पुत्र उदार प्रकृति वाले दारा के हाथ में रहने लगा। तब से कुछ समय के लिये पुनः सम्राज्य की धार्मिक नीति में कुछ परिवर्तन दिखाई दिये। इन पिछले वर्षों में मथुरा का परगना दारा को जागीर में मिल गया था। अतः ब्रज प्रदेश में सहिष्णुतापूर्ण उदार धार्मिक नीति बरती जाने लगी। उसके परिणामतः वहॉ की स्थिति में भी कुछ सुधार दिखलाई दिया था। दारा ने मथुरा में वीर सिंह बुन्देला निर्मित कृष्ण जन्म स्थान पर बने हुए केशवराय जी के मन्दिर के लिये पत्थर का एक सुन्दर, रगीन कटहरा भेंट किया था। किन्तु वह परिवर्तित परिस्थितियॉ स्थायी न रह सकी। सितम्बर 1657 ई0 में शाहजहॉ के बीमार पड़ने पर हुये उत्ताराधिकारी के युद्ध में औरंगजेब विजयी रहा तथा वह पिता को कैद करके, भाइयों का वध करके जुलाई 1658 ई0 में सिहांसनरूढ़ हुआ।

यह निर्विवाद सत्य है कि ब्रजप्रदेश में विद्रोंहो की रूपरेखा मुगलकाल के प्रारम्भ से ही बनना शुरू हो गयी थी। यद्यपि इन विद्रोंहो का एक कारण आर्थिक भी था फिर भी इस पर धार्मिकता का आवरण चढ़ाकर इतिहासकारों ने प्रस्तुत किया है। अकबर के शासनकाल में उसकी धार्मिक समन्वयवादी नीति ने इस प्रदेश की जनता को शांति सुव्यवस्था बनाये रखने का व्यापक आधार प्रदान किया। जहॉगीर के शासन काल में उसके राज्यरोहण के समय यद्यपि ब्रजप्रदेश में अव्यवस्था हुयी थी फिर भी उसे सुव्यवस्थित कर लिया गया। जहॉगीर की राजस्व नीति के विरोध में ब्रज के यमुना पार के किसानों ने विद्रोंह कर दिया था जिसे बेरहमी से कुचलकर जनता की भावनाओं को अनदेखा कर दिया गया।[5] शाहजहॉ के शासनकाल में उसकी धार्मिक नीति इस्लाम के लिये कटटरता तथा कुछ हद तक धर्मान्ध भी थी। इसके शासनकाल में ब्रजप्रदेश की जनता ने जाट शक्ति के नेतृत्व में 1628 ई0 में महावन परगने में विद्रोह किया।[6] जिसे कुचलकर सुव्यवस्था की गई मथुरा, कामॉ, पहाड़ी तथा महावन परगने का फौजदार मुर्शिद कुली खॉ अली तुर्कमान 1636–38 ई0 के अत्यचारों से जाट विद्रोहियों

ने मुक्त प्राप्त की।[7] हिण्डौन परगने का उपद्रव 1637–40 ई0[8] तथा कामॉ, पहाड़ी तथा खोह मुहाल के जाट मेवाती तथा मुगलों के सामूहिक आंदोलन 1649–51 इसी विद्रोह के प्रारम्भिक चरण माने जा सकते है।[9]

औरंगजेब ने जाटों के भाईचारे, धार्मिकता तथा कबीलाई जन जीवन को हानि पहुॅचाई यह कार्य उसने जान बूझकर नहीं किया वरन सरकार की बदलती हुई प्रकृति एवम स्वरूप के कारण ऐसा हुआ। अकबर ने अथक परिश्रम द्वारा प्रयास करके बड़ी संख्या में ग्रामीण लोगों को विस्तृत रूप से धार्मिक तथा सामाजिक स्वतंत्रता और स्वायत्तता की मॉग स्वीकृति दी थी। लेकिन परवर्ती मुगल सम्राटों ने प्रजा के दृष्टिकोंण से इस रूचि का प्रदर्शन नहीं किया।

औरंगजेब के आगमन से राज्य के बर्ताव में धीरे–धीरे संकीर्ण तथा विकेन्द्रित निरंकुश शासन प्रारम्भ हुआ शासक के निरंकुश रवैये वे व्यक्तित्व के अन्य गुणों के मध्य उसके जिददी तथा दृढ़ निश्चय सोच आश्चर्यजनक वरदारन थी। इन सभी तत्वों से वह दूसरों के प्रति विध्वंसक, संकीर्ण मानसिकता, एक तरफा सोच ओर एक खुद के प्रति जुनूनी व प्रत्येक क्षण प्रशासनिक जानकारी लेने वाला बना था।

अगर देखा जाये तो सैद्धान्तिकरूपेण औरंगजेब की तानाशाही अकबर के ही समान थी परन्तु अकबर के बौद्धिक व समझदारी दृष्टिकोण से उसकी प्रजा उसे पसन्द करती थी।[10] और उसे राजनैतिक सोच की पूर्ण स्वतंत्रता प्रदान की थी। लेकिन औरंगजेब की विकेन्द्रित और संकीर्ण जाटशक्ति की दृढ़ स्वतंत्र सोच तथा एक सहज धार्मिक जुडाव उनका मुख्य गुण रही थी।[11] जा कि आज भी इसमें देखने को मिलती है वे बाहरी हस्तक्षेप से घृणा करते थे और आन्तरिक मामलों में स्वतंत्रता के अभ्यस्त थे।[12] जाट शक्ति में अपनी प्रजा अपने आदर्शों को आत्मसात करने और अपनी दिनचर्या को अपने अनुरूप रखने की प्रवृति थी। उनकी परम्परागत प्रथाओं को सम्मान देते हुये अकबर (8 रमजान 987) सन 1578 तथा (11 रमजान 989) सन 1580 में जाटों को आन्तरिक स्वतंत्रता बहाल करते हुये ऊपरी दोआब के अतिरिक्त मामलों के लिये दो आदेश जारी किये जिनमें कहा गया था कि उनकी प्रथाओं तथा नियमों को उनकी प्राचीन परम्पराओं के अनुरूप होने दिया जाये।[13] अकबर की इस प्रकार की दूरदर्शी नीति शाहजहॉ के समय तक मानी गयी। जहॉगीर ने भी कभी –कभी जाटों के मुख्य नेताओं और समुदाय को अपने पक्ष के लिये बुलाया लेकिन अन्ततः औरंगजेब ने इस नीति को उलट दिया। इसकी धर्मान्धता ने जाटों में चिन्ता उत्पन्न कर दी उन्होंने इस मामले में छपरौली में सन 1661 ई0 में एक सभा में विचार विमर्श कर मुगलशाही दरबार में इस नीति को वापिस लेने की वकालत की।[14] ऊपरी दोआब के जाटों के साथ औरंगजेब के व्यवहार को देखते हुये भी अनुमानित है कि औरंगजेब के हाथों से ब्रज प्रदेश के कृषक समुदाय ने निश्चित रूप से कष्ट पाया होगा। साक्ष्यों के अनुसार जनजातीय जाटों की प्रथाओं व अधिकारों में घुसपैंठ ने उनमें रोष पैदा कर दिया। एक विश्वसनीय तथा सार्थक कारण यह भी था कि ब्रजप्रदेश के किसान वर्गीय जाटों का आर्थिक पक्ष भी बगावत के लिये मुख्य रूप से उत्तरदायी था। देखा जाये तो मुगल राजस्व आवंटन का तरीका खेतीहर जाटों के लिये नुकसान दायक तो था ही वास्तव में शाही तंत्र के लिये भी बाहरी रूप से नुकसानदायक था।[15]

सम्पूर्ण मुगल काल में जागीर प्रथा के कारण कृषक आर्थिक रूप से निरन्तर कष्ट भोग रहे थे। वे अपनी जिंदगी बचाने के लिये एवम आवश्यकताओं की पूर्ति के लिये कर्ज लेते थे।[16] इतिहासकार भीमसेन ने कहा है कि कोई आशा नहीं थी कि जागीर अगले वर्ष अधिकारियों को वापस मिल जाये।[17] इसलिये वह राजस्व वसूलने के लिये अत्यधिक अत्याचार करते। भीमसेन ने इशारा करते हुये कहा है जब एक जागीरदार अपने संग्राहकों को राजस्व वसूल करने के लिये भेजता था वह पहले कर्ज का भुगतान लेता था, यह संग्राहक उसी गॉव का होता था। जो डरा हुआ होता था क्योंकि दूसरा व्यक्ति जिसने बड़ा कर्ज दे रखा होता था वह जागीरदार का अनुसरण करता और वसूली करने में बिल्कुल भी नहीं हिचकता था।[18] यदि कृषक राजस्व देने से इंकार कर दे तो उनको जघन्य दण्ड दिया जाता था तब उनके पास अपनी औरतें बच्चे या जानवर बेचने के अलावा दूसरा विकल्प नहीं बचता था या फिर विकल्प के रूप में राज्य का त्याग करना पड़ता था।[19] मुगल शासक के पास शोषण का कोई निर्धारण नहीं था लेकिन निर्धारण प्रायः अपर्याप्त होता था और अधिकारी सामान्यतः अपने अतिक्रमण के तरीके खोजा करते थे।[20]

वास्तव में मुगल राजस्व प्रणाली बाह्य तौर से किसानों को नष्ट करने वाली और अन्ततः सम्राज्य के लिए हानिकारक थी। संग्राहकों का शोषण समय के साथ–साथ बढ़ता गया।[21] अन्त में यह वहॉ पहुॅच गया कि शोषण अतिक्रमण अभियान की नृशंसता गुलाम नवी के समय तीव्र गति से बढ़ती गयी।[22] बेंदल ने भी बताया है कि काश्तकारों से निष्णुरता से लगान लिया जाता था। इसके विरूद्ध प्रतिरोध लेने के लिए जाटों ने अराजकता की शरण ली।[23] यह सामान्य बात थी परन्तु जाटों ने राजस्व वसूली प्रणाली का खुला विरोध किया क्योंकि खेती बाडी किसानों के जीवन से जुडी हुई थी क्योंकि जाट होना किसान होना है।[24] मासिर उलउमरा के लेखक ने देखा कि अधिकारियों के कार्यालयी व्यवहार के कारण ब्रजप्रदेश मथुरा व आगरा के जाट काश्तकारी के लिए बहाने बनाने लगे।[25] स्पष्टतः दमनात्मक प्रणाली किसानों के प्रति बढ़ती चली गयी। इसकी जाटों में तीखी प्रतिक्रिया हुई तथा विद्रोह चरम सीमा में पहुॅचता प्रतीत हुआ क्योंकि अधिकतम किसान हठी, साहसी, अदम्य इच्छा शक्तिवाले उनकी बहादुरी व एकता सेना के लिए तीव्र अवरोध उत्पन्न करने वाली थी। जाटों के पास कृषकों की लडाकू सेना थी। वारीकी से उनकी पिछली सोच देखें तो उनकें कृषि के उपकरण अच्छे हथियार लडाई की तैयारी के लिए थे।[26]

अधिक राजस्व का बढ़ाना उन्हें नागवार हुआ जो कि नुकसानदेह चंदा व संग्राहकों की शासकीय लूट से होता था। वे अधिकतम अवसरों में होने वाले सेना के दमानात्मक कार्यों के सख्त विरोधी थे।[27] यह अच्छी तरह से इस प्रकार व्यक्त हो सकता है कि जाट सामान्यतः शांत रहते थे पर उनका धैर्य उखड़ने पर वे म्यान से तलवार निकाल लेते थे।

जाट विद्रोह का एक कारण था कि जाट जंमीदारों और जाट कृषकों दोनो ही परिस्थितिजन्य कड़वाहट में जी रहे थे प्रायः जमीदारों की प्रवृति थी कि वे मुगल शासन के आदेशों की अवहेलना करते थे पड़ोसियों के विरूद्ध सेना आने पर वे शाही प्राधिकरण की अवज्ञा करते और स्वयं को बढ़ा चढ़ा कर प्रस्तुत करते।[28] लेकिन उनका औरंगजेब के शासन के विरूद्ध कार्य करने की प्रकृति बहुत रक्षात्मक और सक्रिय थी अनेक कारणों से यद्यपि रक्षात्मक नीति नहीं चल सकी।[29]

इस प्रकार कुछ विशिष्ट शिकायतों के कारण जंमीदारों तथा किसानों ने अपने एक दुश्मन के विरोध के लिए हाथ मिला लिये । हम देखते है कि गोकुल और दूसरे जमींदारों ने सामान्य सैनिकों के लिए नेतृत्व का प्रबंध किया।[30] लेकिन जंमीदारो तथा उनके जाट अनुयायियों का संगठन अस्थिर था। सामान्यतः साम्राज्य के बहुत से जंमीदार निर्देशक की तरह थे।[31] जिससे वे सब धीरे–धीरे असन्तुष्ट होने लगे। क्योंकि जाट व अन्य अधिकाधिक दूसरे वर्ग के लोग गहराई से व्यक्तिगत पसन्द थे और बाहरी नियंत्रण पसंद नहीं करते थे।[32]

औरंगजेब की धर्मान्धता जाट विद्रोह के कारणों में सर्वाधिक दिखाई देती है स्वभाव से औरंगजेब एक रूढ़िवादी व्यक्ति था। उसने सम्राज्य में बता दिया था वह इस्लाम का शुद्ध समर्थक है।[33] एक सम्राट के रूप में उसने मुस्लिम साम्राज्य का सपना देखा था। उसने सम्राज्य के लिए अपने हदय में रूढिवादी इस्लाम तंत्र बना रखा था।[34] औरंगजेब अपनी धार्मिक नीति के सम्मान के लिए, नाम के लिए, इस्लाम का बढाने के लिए लगा रहा। उसने हिन्दुओं के लिये नियम बनाकर उन्हें इस्लाम में बदला और मन्दिर तोड़े। उसने धर्मान्धता की सतर्कता से शु रूआत की जो बढ़ती गयी। उसका प्रमुख उद्देश्य उसके रूढ़िवादी पवित्र नियमों को मुस्लिम व गैर मुस्लिमों को मानना था।[35] इसलिये उसने लोगों के लिये बड़े पैमाने पर गैर इस्लामिक समारोह को बन्द करने व इस्लाम को बढ़ाने के लिये नियम बनाये।[36] हिन्दू धर्म का प्रवुद्ध वर्ग इसलिये भी उत्तेजित हुआ क्योंकि तीर्थ यात्रा कर पुनः लगा दिया गया था। 1665 ई0 में हिन्दुओं प्रमुख त्यौहार होली, दीवाली को सार्वजनिक रूप से कड़ाई से रोका गया।[37] 1668 ई0 में हिन्दू मेलों को पूरे साम्राज्य में प्रतिबंधित कर दिया गया। 1665 ई0 में ही हिन्दुओं पर भेदभाव पूर्ण कर थोपे गये, आदेशित किया गया कि हिन्दुओं के सामान में 5 प्रतिशत व मुस्लिमों को 2.5 प्रतिशत कर देना होगा। 1667 ई0 में मुस्लिमों को इस भार से पूर्णरूपेण मुक्त कर दिया गया।[38] इसी प्रकार के कर खेती–बाडी की पैदावार में भी लगाये गये।[39] यह सभी कदम राजस्व वसूली के भाग थे। जो कि हिन्दूओं के ऊपर इस्लाम स्वीकार करने की शर्त पर लगाये जाते थे। इसके अलावा औरंगजेब ने

गैर मुस्लिमों को इस्लाम अपनाने के लिये एक सम्मोहक विधि अपनायी। जिसमें उसने विभिन्न प्रकार के पद, सामाजिक सम्मान तथा शाही ईनाम दिये।[40]

उपर्युक्त के अलावा औरंगजेब का कहर मन्दिरों को तोड़ने पर टूटा । 1669 ई0 में प्रारम्भ में उसने घोषत किया कि कानून के अन्तर्गत नवीन मंदिरों नहीं बनाये जायेंगे लेकिन यह भी कहा कि पूराने न तोडे जाये।[41] धीरे–धीरे वह उससे हटता गया। सोमनाथ का मन्दिर शीघ्र ही उसके शासन में गिरा दिया गया।[42] 1665 ई0 में उसने गुजरात में दुबारा मरम्मत कराये गये मन्दिरों को गिराने का आदेश दिया। जो कि उसने पहले नष्ट कर दिये थे। दूसरी बार उसने उडीसा के नये मन्दिरों को भी गिराने का आदेश दिया। इस प्रकार 1669 ई0 तक उसने स्वयं को धार्मिक कटटरपंथी के रूप में पूर्णतया स्थापित कर लिया। इसके बाद के वर्ष उसने सामान्य आदेश दिया कि हिन्दूओं के सभी विद्यालय व मन्दिर, प्रार्थना स्थल व अध्ययन स्थल उसके सम्राज्य में समाप्त कर दिए जायें। इस आदेश के बाद विश्वनाथ सहित सभी प्रमुख मन्दिर गिरा दिये। इस प्रकार 11 वर्ष के थोडे समय में औरंगजेब ने अकबर की सहयोगवादी व साम्यवादी छबि तोड़ दी। औरंगजेब ने अकबर की सहयोगवादी छवि तोडकर जनता की सहयोग की भावना समाप्त कर दी, तब उसने गैर मुस्लिमों के लिये धर्मान्ध उत्पीड़न की बाढ़ लगा दी।[43]

औरंगजेब के शासन में जाटों के उत्थान का स्थान ब्रज प्रदेश बुरी तरह प्रभावित रहा। औरंगजेब की चिढ़ का मुख्य केन्द्र इस क्षेत्र में हिन्दुओं के पवित्र तीर्थ स्थलों का होना था। उसने अब्दुन्नबी को मार्च 1660 ई0 में फौजदार के रूप में हिन्दुओं का दमन करने के लिये मथुरा में नियुक्त किया। इस अधिकारी ने संदिग्ध रूपेण 93000 मोहर, तेरह लाख रूपये और साढे चार लाख की कीमती वस्तुए जमा की।[44] अब्दुन्नबी ने शहर का प्रमुख मन्दिर नष्ट कर 1661 ई0 में जामा मस्जिद बनवायी। इसके बाद औरंजेब का आदेश मानते हुए उसने प्रसिद्ध केशवराय मन्दिर को 1661 ई0 में नष्ट कर दिया[45] इतना ही नहीं औरंगजेब ने ब्रज प्रदेश में हिन्दू धर्म व हिन्दू संस्कृति को नष्ट कर उसके स्थान पर इस्लामी मजहबी ओर तहजीब को प्रचलित करने की बडी चेष्टा की। उसके लिये जो उपाय काम में लाये गये उनमें बुजप्रदेश के नामों का मुसलमानीकरण भी था। उसके अनुसार मथुरा का नाम बदल कर 1670 ई0 में इस्लामाबाद[46] या इस्लामपुर रखा गया, बृन्दावन को मोमिनाबाद और पारसोली–चन्द्रसरोवर को मुहम्मदपुर बनाया गया है किन्तु वे बदले हुए नाम मुसलमानी शासनकाल में सरकारी कागजों में ही रहे जनसाधारण में कभी भी प्रचलित नहीं हुये।

अन्ततः इन सभी क्रियाकलापो ने ब्रजप्रदेश की जाट शक्ति को उत्तेजित किया। यह सभी विश्वसनीय तथा वास्तविक कारण है जो कि योजनाबद्ध रूप से कट्टरपन्थी औरंगजेब ने धार्मिक उत्पीड़न कर जाट शक्ति की भावनाओं को प्रताड़ित किया। सामान्यतः जाट शक्ति के लिये कहा जाता है कि वह अपने धार्मिक विश्वासों में रूढ़िवादी नहीं थे वह अपने दर्शन या धार्मिक नीतिपरक भेदों से परेशान नहीं थे लेकिन बाह्य कर्मकाण्ड के विशेष पक्षधर थे। औरंगजेब द्वारा मेले तथा त्यौहारों का बंद करना तथा धार्मिक स्थानों का अपवित्रीकरण उनके लिये विशेष महत्व रखते थे।[47]

1668–1669 ई0 में औरंजेब का धार्मिक कटटरपन व गैर मुस्लिमों को प्रताड़ित करने की प्रतिंबद्धता चरम सीमा पर थी। राजनैतिक, आर्थिक, सामाजिक एवं धार्मिक उत्सवों, प्रतिष्ठानों एवं पदों से हिन्दुओं का बहिष्कार और मंदिरों को ढ़हाने के बाद ब्रजप्रदेश की जनता गोकुल के नेतृत्व में विद्रोह के लिये आगे आयी।

चलता–फिरता साहित्य या सखस[48] जो जाटों के तथा दूसरे स्थानीय लोगों में प्रचालित था, में समर्थ गुरू रामदास के आगमन का जिक्र मिलता है। जिन्होंने जाटों को आंदोलन के लिये प्रेरित किया। इन्होंने जाटों से आग्रह किया कि वे अधिकाधिक संख्या में एकजुट हों। इन्होंने अपने ओजस्वी एंव प्रभावपूर्ण तरीके से स्पष्ट किया कि तानाशाही पाप है तथा तानाशाही बर्दाश्त करना उससे भी बडा पाप है। गुरू द्वारा निवेदन करने व प्रेरणा देने से गोकुल ने हिन्दुओं के उत्पीड़न के विरूद्ध बगावत व की रक्षा करने की शपथ ली।[49]

समर्थ गुरू रामदास की यात्रा जाटों के क्षेत्र में हुयी थी यह मजबूत मान्यता है। देवदत्त इस मान्यता से संतुष्ट नहीं है कि रामदास आये और उन्होंने जाटों को औरंगजेब का भ्रष्ट एवं प्रतांड़ित शासन समाप्त करने की प्रेरणा दी। समर्थ गुरू रामदास की शिक्षायें व दर्शन अध्ययन का विषय नहीं है लेकिन यह अच्छी तरह माना जाता है कि वह धार्मिक वक्ता थे वे जीवन के नकारात्मक दर्शन को नहीं मानते थे। वे देश व समाज की समकालिक बुराइयों को हल करने में रूची लेते थे। उनकी यात्रा व प्रेरणा ने गोकुल व साथियों को प्रेरित

किया।[50] जाटों के क्रोध का लावा उबाल पर था ब्रजप्रदेश की पूरी जनता उनके साथ थी। यह लावा कभी भी फट सकता था। सखस के अनुसार गुरू रामदास ने इस लावे को फोड दिया। के0 आर0 कानूनगों ने 1669 ई0 के विद्रोह में इसे देखा। उसकी नीतियों के कारण सम्पूर्ण भारत में भीषण आग भड़की और हिन्दू साम्राज्य का नव जागरण हुआ।[51]

इस प्रकार से जाट शक्ति के विद्रोह का कारण धार्मिक ही प्रतीत होता है लेकिन फिर भी आर्थिक कारण भी आन्तरिक बल देते है। औरंगजेब के शासन में कार्यप्रणाली में भ्रष्टता रात–भर में नहीं बढ़ गयी थी। यह प्रकृति उसे पहले से ही ज्ञात थी लेकिन जब तक औरंगजेब का शिकंजा जकड़ता धार्मिक और परम्परागत कबीलाई जाटों का आर्थिक पक्ष अत्यधिक सुदृढ़ हो चुका था और वह संघर्ष करने की स्थिति में आ चुके थे।

निष्कर्षतः कह सकते है कि ब्रजमण्डल का जाट विद्रोह राजनैतिक विद्रोह का प्राथमिक परिणाम था जिसने धार्मिक उत्पीडन से उत्पन्न असंतोष को प्रज्वलित कर गम्भीर रूप दे दिया। ब्रजमण्डल के जाट जमींदार किसानों ने धर्म की रक्षा और मानव स्वाधीनता का झण्ड़ा उठाया। जिसे समकालीन मुगल सरकार तथा संकीर्ण विचारधारा वाले इतिहासकारों ने विद्रोह की संज्ञा देकर इतिहास की रक्त रंजित घटनाओं को दबाने का प्रयास किया है। ब्रजप्रदेश के जाटों का उत्कर्ष औरंगजेब की अदूरदर्शिता का परिणाम था जिससे हिन्दू संगठन, मानवता रक्षा तथा राष्टीय चेतना की शक्ति का विकास किया।

संन्दर्भ

1. रामधारी सिंह दिनकर : संस्कृति के चार अध्यय, पृ0 277।
2. आशीर्वाद लाल श्रीवास्तव : अकबर महान, भाग–1, पृ0 75–76।
3. उपरोक्त : पृ0 80–81।
4. डॉ0पी0डी0 मीतल : ब्रज का सांस्कृतिक इतिहास, पृ0 201।
5. डॉ0पी0डी0 मीतल : ब्रज का सांस्कृतिक इतिहास, पृ0 201।
   जहॉगीर का आत्म चरित्रः पृ0 806।
6. डॉ0 यू0एन0 शर्मा : जाटों का नवीन इतिहास, पृ0 72।
7. महाराज कुमार : मुगलकालीन ब्रजप्रदेश भाग–1, पृ0 159।
8. डॉ0 यू0एन0 शर्मा : जाटों का नवीन इतिहास, पृ0 77–78।
9. उपरोक्त : पृ0 79–81।
10. एन0 एल0 श्रीवास्तव : अकबर थ्योरी ऑफ किंगशिप, पृ0 95।
11. गिरीश चन्द द्विवेदी : द जाटस देअर रोल इन मुगल एम्पाअर, पृ0 21।
12. ए0 एच0 बिंगले : सिख, पृ0 11 में लिखा है कि पूर्व समय में जाटों ने अपने व्यावहरिक सिद्धान्त बदल दिये थे और स्वशासित राष्ट्र मण्डल के लिये तीव्र मतभेद अपनाया।
13. गिरीश चन्द द्विवेदी : द जाटस देअर रोल इन मुगल एम्पाअर, पृ0 21।
14. उपरोक्त : पृ0 20।
15. सर जे0एन0 सरकार : औरंगजेब, भाग–5, पृ0 452–453।
16. सरकार : मुगल एडमिनिस्ट्रेशन, पृ0 80।
17. सरकार : औरंगजेब, पृ0 453।
    बर्नीयर : ट्रेवल्स इन मुगल एम्पाअर, पृ0 227।
18. गिरीश चन्द द्विवेदी : द जाटस देअर रोल इन मुगल एम्पाअर, पृ0 30।
19. गिरीश चन्द द्विवेदी : द जाटस देअर रोल इन मुगल एम्पाअर, पृ0 21।
20. सरकार : मुगल एडमिनिस्ट्रेशन, पृ0 80।
21. सरकार : औरंगजेब, भाग–5, पृ0 452।
22. गिरीश चन्द द्विवेदी : द जाटस देअर रोल इन मुगल एम्पाअर, पृ0 22।
23. उपरोक्त : पृ0 23।
24. उपरोक्त : पृ0 23–25।
25. मासिर–उल–उमरा : अनुवाद एच बेबरीज और बी0 प्रसाद, पृ0 436।

26. गिरीश चन्द द्विवेदी : द जाटस देअर रोल इन मुगल एम्पाअर, पृ0 23।
27. उपरोक्त : पृ0 23।
28. उपरोक्त : पृ0 24।
29. जनरल : प्रथम हबीब, पृ0 338।
30. उपरोक्त : पृ0 341।
31. गिरीश चन्द द्विवेदी : द जाटस देअर रोल इन मुगल एम्पाअर, पृ0 24।
32. बिंगले : सिख, पृ0 90–91।
33. सरकार : औरंगजेब, भाग–5, पृ0 81।
34. उपरोक्त : पृ0 81। एस0 आर0 शर्मा : मुगल शासकों की धार्मिक नीति, पृ0 108।
35. उपरोक्त : पृ0
36. उपरोक्त : पृ0 107–115।
37. गिरीश चन्द द्विवेदी : द जाटस देअर रोल इन मुगल एम्पाअर, पृ0 25।
38. उपरोक्त : पृ0
39. एस0 आर0 शर्मा : मुगल शासकों की धार्मिक नीति, पृ0 142–144। सरकार : भाग–3, पृ0 275–279 ।
40. उपरोक्त : पृ0 170। सरकार : भाग–3, पृ0 276 ।
41. इस आशय का वास्तविक तथ्य बनारस में फौजदार के नाम से भारत कला भवन, बनारस हिन्दू विश्वविद्यालय में सुरक्षित है।
42. गिरीश चन्द द्विवेदी : द जाटस देअर रोल इन मुगल एम्पाअर, पृ0 25।
43. एस0 आर0 शर्मा : मुगल शासकों की धार्मिक नीति, पृ0 132–133।
44. गिरीश चन्द द्विवेदी : द जाटस देअर रोल इन मुगल एम्पाअर, पृ0 26।
45. सरकार : औरंगजेब, भाग –3, पृ0 293।
46. उपेन्द्र नाथ शर्मा : जाटों का नवीन इतिहास, पृ0 86।
47. देशराज : जाटों का नवीन इतिहास, में उल्लेख है कि मेले व त्यौहार महत्वपूर्ण स्थान रखते थे।
48. जोगी इस सखस इकतारा में त्यौहारों के अवसर पर गाते थे।
49. गिरीश चन्द द्विवेदी : द जाटस देअर रोल इन मुगल एम्पाअर, पृ0 26–27।
50. दिलीप सिंह अहलावत : जाट वीरों का इतिहास, पृ0 625–626।
51. उपरोक्त गिरीश चन्द द्विवेदी : द जाटस देअर रोल इन मुगल एम्पाअर, पृ0 26–27।

सन्दर्भ ग्रन्थ सूची

1. आइने अकबरी : अबुल फजल अल्लामी – एच0एस0 जैरेट कृत अंग्रेजी अनुवाद, एशियाटिक सोसायटी ऑफ बंगाल।
2. आर्शीवादी लाल श्रीवास्तव : अकबर दी ग्रेट।
3. मासिर–उल–उमरा : अनुवादक एच0 बेबरीज और बी0 प्रसाद।
4. उपेन्द्र नाथ शर्मा : जाटों का नवीन इतिहास, मंगल प्रकाशन, जयपुर, 1977।
5. एस0 आर0 शर्मा : मुगल शासकों की धार्मिक नीति।
6. गिरीश चन्द्र द्विवेदी : द जाट्स देयर रोल इन मुगल एम्पायर, अरनोल्ड प्रकाशन, दिल्ली।
7. देशराज शर्मा : जाट इतिहास।
8. दिलीप सिंह अहलावत : जाटवीरों का इतिहास, सन 2000।
9. ए0 एच0 बिंगले : सिख।
10. प्रभुदयाल मीतल : ब्रज का सांस्कृतिक इतिहास, राजकमल प्रकाशन, पटना, 1966।
11. श्रीराम शर्मा : द रिलीजस पॉलिसी ऑफ द मुगल एम्परर्स।
12. महाराज कुमार : मुगलकालीन ब्रज प्रदेश, 1536–1718 ई0, अखिल भारतीय मंडल, मथुरा।
13. रामधारी सिंह दिनकर : संस्कृति के चार अध्याय, राजकमल एण्ड संस, 1956।
14. डॉ ए0एल0 श्रीवास्तव : अकबर थ्योरी ऑफ किंगशिप।

15. सरकार जदुनाथ : (औरंगजेब) हिस्ट्री ऑफ औरंगजेब, भाग–1 से 5। 1925, 25, 28, 30, 24, कलकत्ता।
16. वही : फाल ऑफ द मुगल एम्पायर, भाग–2, हिन्दी अनुवाद।
17. वही : मुगल एडमिनिस्ट्रेशन, कलकत्ता, 1920।
18. डॉ धर्मचन्द विद्यालंकार : जाटों का नया इतिहास।

डॉ. नीरज कुमार गौड़
प्राचार्य , एच के एल कालेज ऑफ ऐजूकेशन,
सम्बध्द पंजाब विश्वविद्यालय, चंड़ीगढ़, गुरूहरसहाय, फिरोजपुर. (पंजाब)